उत्तराखण्ड में आपदा एवं राहत

सर्वेक्षण

संयोजक मण्डल –

हरित स्वराज अभियान
हिमालय नीति संवाद
सैडेड
हैस्को
हिमालया ट्रस्ट
उत्तराखण्ड सर्वोदय मण्डल
आपदा संवेदना मंच

नाम – उत्तराखण्ड में आपदा एवं राहत

संयोजक – भुवन पाठक

संपादक – मनोज प्रसाद
रजनीश

संकलन कर्ता –
अनिल जोशी, विपिन जोशी, मनीष, गोपाल भाई, आशा संगीता दिनेश, मानवेन्द्र सिंह नेगी, राजेन्द्र सिंह नेगी, सुमित्रा, विनोद, जीतेन्द्र सिंह

संस्थाओं के नाम – हिमालय नीति संवाद
हरित स्वराज अभियान
आपदा संवेदना मंच
हैस्को
सैडेड
हिमालया ट्रस्ट
उत्तराखण्ड सर्वोदय मण्डल
सैल्फ हैल्प इण्डिया
स्वराज बहुद्देष्यीय स्वायत्त सहकारी समिति
आपदा संवेदना मंच

पता – स्वराज भवन, गढ़सेर पो0 बैजनाथ, बागेश्वर
हैस्को ग्राम, शुक्लापुर, पो0 अम्बीवाला, वाया – प्रेमनगर देहरादून

ई–मेल – bhuwanpathak2004@yahoo.co.in
bahuguna_devendra@yahoo.com

प्रस्तावना

आजादी के बाद की सबसे बड़ी त्रासदी झेल रहा उत्तराखण्डी समाज बारिश समाप्त होने के पश्चात् अपनी बची–खुची फसल समेटने के काम में व्यस्त थे। जहां–जहां इस बीच हमें जाने का अवसर मिला ग्रामीण अपनी फसल समेटने के काम में व्यस्त था। यद्यपि इस व्यस्तता के बावजूद भी इस मानसून सत्र की दिल दहला देने वाली अतिवृष्टि, भूस्खलन तथा बाढ़ को वो नहीं भूले हैं। सरकारी कर्मचारी, राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, आन्दोलन समूहों के साथियों ने अपनी–अपनी शक्ति–सामर्थ्य के अनुसार इस आपदा के समय जनता के बीच जाने तथा उनके दुख–तकलीफों को सुनने का काम किया। इससे जनता का हौसला भी बढ़ा है, लेकिन इस सब के बावजूद आपदाग्रस्त क्षेत्रों के लोग, जिनके परिजन आपदा के ग्रास बने, जिनके मकान या तो पूर्णतः ध्वस्त हैं या रहने योग्य नहीं रह गये हैं, जिनके मवेशी इस आपदा की भेंट चढ़े, जिनके खेत, जमीन, खड़ी फसल बर्बाद हो गई, उनको राहत राशि मिलने का तरीका ना केवल नाकाफी बल्कि अपमानजनक भी है। इस आपदा राशि को प्राप्त करने में सरकारी दतरों के चक्कर लगाने, पटवारी से लेकर बैंकों तक आने–जाने के अतिरिक्त यदि पटवारी भी अपना सुविधा शुल्क मांगे जैसे पौड़ी जिले में हुआ तो वो 2000–2200 की सहायता घर तक आते–आते 1000 रुपये में तब्दील हो जाती है।

इस पूरे दौर में लगातार आपदा प्रबंधन व राहत कानून या नियम के अभाव में सारा राहत का काम वह चाहे राहत राशि वितरण का काम हो या प्रभावितों के चिन्हीकरण का, मुख्यमंत्री व पटवारी के विवेक पर निर्भर रहा इसमें यदि कोई पीड़ित या प्रभावित किसी पटवारी या प्रशासनिक अधिकारी को अपनी परेशानी या स्थिति नहीं समझा पाये तो उसके लिए कोई सहायता नहीं थी। सरकारी आकड़ों पर यदि विश्वास किया जाये तो इस आपदा में 171 से ज्यादा लोगों की जान गई। 30 लाख लोग प्रभावित हुए, 3500 गांव इस आपदा की चपेट में आये कुल 24000 हजार मकान पूर्ण या आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए, जिसमें क्षतिग्रस्त सैकड़ों गौशाला शामिल नहीं हैं। सरकारी दावे के अनुसार 222 गांवों को तुरंत विस्थापित करने की आवश्यकता है। इन सब परिस्थितियों के बावजूद पिछले 10 वर्षों में प्रदेश सरकार अपनी पुनर्वास नीति नहीं बना सकी। जबकि भारत सरकार राष्ट्रीय पुनर्वास व पुनर्स्थापन नीति 2007 में बना चुकी है। जिसके आधार पर प्रत्येक राज्य अपनी पुनर्वास नीति बना सकते हैं। बिना पुनर्वास नीति के 2200 गांवों को कैसे विस्थापित करेंगे यह विचारणीय प्रश्न है। इस आपदा के दौरान सड़कों पेयजल योजनाओं , स्कूल भवनों, तथा सार्वजनिक सुविधाओं को जो क्षति पहुंची उसका आंकलन अभी जारी है। आपदा में हुए नुकसान का आंकलन करने के लिए केन्द्रीय टीम का दौरा हो गया। केन्द्र सरकार ने 500 करोड़ रुपये दे भी दिये। प्रदेश सरकार ने 21 हजार 200 करोड़ रुपये की मांग की है। प्रदेश के मुखिया को प्रदेश की जनता को बताना चाहिए कि ये किस–किस मद के

लिए मांगा है।

इस आपदा के दौरान एक बात और स्पष्ट हो गई कि सरकारी तंत्र में आपदा से निपटने के लिए पूर्व तैयारी के कोई संकेत नहीं मिले। अभी कोई सर्वे प्रपत्र तक सरकार की तरफ से जारी नहीं हुआ, जिसके आधार पर पूरे प्रदेश में प्रभावित गांवों, परिवारों, जनसंख्या व प्रभाव के विवरण का पता लगाया जा सके। कृषि भूमि का मुआवजा, खड़ी फसलों के नुकसान की क्षतिपूर्ति जैसे मसले मुंह बांये खड़े हैं। कई इलाकों में भुखमरी पैर पसार रही है। टिहरी, उत्तरकाशी, चमोली, पिथौरागढ़, नैनीताल जिले के दूरस्थ इलाकों में पिछले दो माह से सरकारी राशन नहीं पहुंचा है। सड़कों के अभाव में राशन, कैरोसीन, दवाइयां, सब्जी जैसी अन्य दैनिक आवश्यकता की सामग्री का अभाव लगातार बढ़ रहा है।

ऐसी स्थिति में हमारे मुख्यमंत्री व सरकार उत्तराखण्ड से बाहर की दुनिया को ये संदेश दे रहे हैं कि जैसे हमारी सरकार ने कुंभ का सफल आयोजन किया वैसे ही आपदा से भी हम सफलतापूर्वक निपट रहे हैं। जबकी हमारी सरकार 18 सितम्बर के बाद के 20 दिनों में भी पूरे प्रदेश का जिलेवार, तहसीलवार, कोई सटीक सूचना प्रपत्र तैयार नहीं कर पायी। जो सूचनायें प्रकाशित भी की हैं वे आधी–अधूरी तथा असंपादित हैं। कहीं तो सूचना लेने वाले पहुंच ही नहीं पाये जहां पहुंचे वहां जो मानक तय किये गये उनके आधार पर ही केवल सूचनाएं एकत्र की गई। जैसे गौशाला के लिए कोई मुआवजा नहीं होने के कारण कुल कितने गौशालायें पूर्ण या आंषिक रूप से क्षतिग्रस्त हैं का कोई आंकलन या संख्या तक सरकार के पास नहीं है।

इस निराशा तथा दुःख के समय जिस तरह सभी राजनैतिक दलों के नेताओं, कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवी संस्थाओं, आन्दोलन समूहों के कार्यकर्ता, बुद्धिजीवियों, सरकारी कर्मचारियों तथा आम जनता ने आपदाग्रस्त इलाकों में जाकर लोगों को हौसला बंधाया, वह संतोष प्रदान कर गया। लेकिन इस सब के बीच जिस चीज का अभाव लगा वो इन सब के बीच समन्वय व संवाद का अभाव था। चूंकि हमने पहले ही तय किया था कि हम तब क्षेत्र में प्रभावित इलाकों में जायेंगे जब तूफानी दौरे समाप्त हो चुके होंगे। आज जब हम यह सब लिख रहे हैं – आपदा बीते महिनो चुके हैं। लोग अपनी बची–खुची फसल समेट रहे हैं। अखबारों में आपदा के सवालों का स्थान लगातार कम होता जा रहा है। सरकारी कर्मचारी भी अब प्रभावित/पीड़ित परिवारों को अपने दतर, विकासखण्ड या तहसील मुख्यालयों पर बुलाने लगे हैं। जो खुशनसीब परिवार पूर्ण प्रभावित घोषित हुए, उनको 50000 रुपये मिले हैं। जो बदनसीब उन मानकों में नहीं आये उनको 2000 रुपये पर संतोष करना पड़ा है।

पहाड़ के साथ–साथ मैदान में हरिद्वार व उद्यमसिंह नगर जिले के सैंकड़ों गांवों में सौंग, गंगा, कोसी, रामगंगा, सूखी, वेगुन जैसी नदियों का पानी अभी भी जमा है जिससे

महामारी का ख़तरा बना है। विकासनगर से लेकर बनबसा तक टोंगिया, बनगुर्जर, बांग्लादेशी शरणार्थी, थारू बोक्सा समेत हजारों की संख्या में उड़िया व प्रवासी मजदूर जो अपने कच्चे मकानों में रहते थे, उनके घर व जमीन सब बह गये। और सरकार व उसके कारिंदे ये सोचकर खुश हैं कि चलो इनमें से अधिकांश लोगों का जो कब्जा था बनभूमि पर वो स्वतः ही समाप्त हो गया। जबकि ये लाखों की आबादी इस बाढ़ के बाद सरकारी स्कूलों, पंचायत घरों, प्लास्टिक के कच्चे झोंपड़ों में दिन गुजार रहे हैं। इस आपदा की सबसे अधिक मार गरीब परिवारों पर पड़ी है।

इस सब व्यथा पर लिखने को बहुत है लेकिन वो संस्मरण जैसा होगा। जबकि इस समय महत्वपूर्ण बात है आपदाग्रस्त क्षेत्रों तथा सरकारी प्रयासों की वास्तविकता सामने लाना है। यदि समय रहते प्रयास नहीं किये गये तो कई लोग महामारी व ठण्ड में आने से अपनी जिन्दगी से हाथ धो सकते हैं।

प्रभावित गांवों का प्राथमिकता के आधार पर संक्षिप्त विवरण

प्रदेश के कई जिलों व विकास खण्डों के गाँवों में अभी तक सरकार की राहत राशि व पुनर्वास के काम शुरू नहीं हो पाये हैं। इन इलाकों की विस्तृत सूची तो व्यापक सर्वे के बाद तैयार हो पायेगी अभी तक प्राप्त सूचनाओं व आकड़ों के आधार पर निम्न गाँवों में त्वरित राहत खासकर अस्थाई आवास व भोजन, गरम कपड़ों व बिस्तर की आवश्यकता है। नैनीताल, उधमसिंह नगर, व हरिद्वार के अति आपदाग्रस्त इलाकों के भ्रमण के दौरान जो सूची हमने तैयार की उसके आधार पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

निम्नलिखित संस्थाओं द्वारा अपने स्तर पर लोक संवाद एवं आपदा प्रभावित इलाकों के सर्वेक्षण के उपरान्त आंकड़ों का संकलन किया गया है। इस सम्पूर्ण प्रयास में सम्मिलित संस्थाओं के नाम निम्नवत हैं–

हिमालय नीति संवाद
हरित स्वराज अभियान
आपदा संवेदना मंच
हैस्को
सैडेड
हिमालया ट्रस्ट
उत्तराखण्ड सर्वोदय मण्डल

जनपद – नैनीताल

विकासखण्ड– बेतालघाट

जारोसी
छोड़ीधूरा
आम बाड़ी
ऊचाकोट
ओड़ा बासकारे
दाजिमा
थुवास्लोक

बेतालघाट– आपदा के बाद सड़कों और पहाड़ों की स्थिति

विकासखण्ड – ताड़ीखेत

सुनाकोट सेरा
बग्वान
पातली
बेचौड़ी
छानीखेत
मयू
मतेला
चापड़
कनारगांव –

बेतालघाट का भ्रमण करते उत्तराखण्ड के कार्यकर्ता

उपरोक्त गांवों में 22 मकान पूर्णतः ध्वस्त हैं, 30 मकान आंशिक क्षतिग्रस्त हैं। रोड से दूर बसे गांवों में कोई राहत नहीं। कोई प्रशासनिक मदद नहीं मिली है। एन0 जी0 ओ0 द्वारा भी कोई मदद नहीं। कुछ गांवों में आपदा प्रबन्धन की टीम ने सर्वे किया है। खासकर यहां के दलित परिवारों को प्राथमिक सहायता भी प्राप्त नहीं हुई। इन परिवारों के पास खेती के लायक जो जमी़न थी वह भी बह गई है।

जिला नैनीताल

विकासखण्ड – ओखलकाण्डा

सुन्दर खाली

पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त, 28 घर रहने योग्य नहीं। 10 किलोमीटर तक सम्पर्क मार्ग ध्वस्त। उक्त गांव में त्वरित रूप से राशन, कपड़ा और अन्य जरूरी सामग्री की आवश्यक्ता है।

चुकम गांव

इस गांव के 52 परिवार प्रभावित हैं जो बटाईदार थे। प्रशासन सिर्फ भूमि के मालिकों को मुआवजा दे रही है। 10 परिवार पूर्ण रूप से बरबाद हो चुके है। उक्त क्षेत्र में कोसी नदी के जल भराव से प्रभाव पड़ा है।

विकास खण्ड– रामनगर

आमडंडा गांव

गांव पूर्ण रूप से जल भराव के कारण प्रभावित है। सड़क के किनारे रह रहे 25 परिवार पूर्ण प्रभावित है । भोजन व दैनिक सामग्री का इंतजाम अभी तक सरकारी तौर पर नहीं हो पाया है।

जनपद – उधम सिंह नगर

शक्तिफॉर्म 7, 8

रंजीत नगर
सुरेन्द्र नगर
मोहन नगर
जय नगर
अरविन्द नगर
टुकड़ी बिचवा
बेगुल और देवड़ा नदी

विकासखण्ड सितारगंज

कुल प्रभावित परिवारों की संख्या 152

उधमसिंह नगर के सितारगंज व खटीमा विकास खण्ड बुरी तरह से प्रभावित है जहां पर बेगुल व देवड़ा नदी के साथ–साथ नानक सागर व हरीपुरा बैराज के पानी ने भारी तबाही मचाई है। कुल प्रभावितों की संख्या 6000, सुरेन्द्र नगर में 155 परिवार प्रभावित हैं। लोग प्राथमिक विद्यालयों में रह रहे है। करीब 20 गांवो का सम्पर्क टूट चुका है। नानक सागर से छोड़े गये पानी के कारण टुकड़ी और बिचवा बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। 18 मकान पूर्ण रूप से ध्वस्त हो चुके है। पानी भराव से क्षेत्र में महामारी का खतरा बना हुआ है। डेंगू व चिकनगुनिया के साथ–साथ पीने के पानी का लगातार अभाव बना है।

विकास खण्ड खटीमा

अचगनी गांव
विचौर गांव
ऊँची महवत
संतना
राजीव नगर
इस्लाम नगर
बाल्मिकी बस्ती

उपरोक्त गांव पूर्ण रूप से ध्वस्त हो चुके हैं। सभी लोग प्राथमिक स्कूलों में रह रहे हैं। (मुरवरास नाले के पानी से प्रभावित) मकान ध्वस्त हुए हैं, खेती की जमीनें नश्ट हुई हैं। भोजन सामग्री व गरम वस्त्र नष्ट हो चुके हैं। जगह–जगह पानी भराव से मच्छरों से डेंगू

व चिकनगुनिया होने की खतरा बना है।

नोट – जिला उधमसिंह नगर, जनपद के हरिपुरा जलाशय जो भाखड़ा व गौड़ नदी पर बना उसके तटबन्ध के भीतर चार गांवों में तबाही हुई है।

<u>जनपद – हरिद्वार</u>

विकास खण्ड – खानपुर

शेरपुर बेला
दल्लेवाला
दुगड़पुरी
जोगावाला
लालपुर
मयाना
मारे वेल्ला
मोहनावाला
मथाना

विकास खण्ड – लक्सर

रापसी
भोगपुर
विक्रमपुर
बिषनपुर कुटी
दरगा पुर
लावेल पुर
कुटिनेत वाला

उपरोक्त गांवों की वर्तमान स्थिति –

हरिद्वार जिले के दो विकासखण्डों में आपदा ग्रस्त परिवार नारकीय जीवन जी रहे हैं। सरकारी व गैर सरकारी सहायता नहीं पहुंची है।

मयाना में अभी तक पानी भरा है। फसलों का नुकसान हुआ है। चारा, भोजन, ईधन, आदि की सपलाई नहीं हो पा रही है। मकानों में दरार आ चुकी है। डैगूं और चिकनगुनिया जैसे रोगों के फैलने की आशंका। 5 मकान ध्वस्त हो चुके हैं, प्रशासन की ओर से कोई कैम्प नहीं चल रहा है। 7 परिवार अन्य लोगों के घरों में रह रहे हैं। खेती तबाह को चुकी हैं। स्वास्थ्य सुविधा नहीं मिल पा रही है। ग्रामीण छप्पर, बना कर मुश्किल से रात काटने को मजबूर हैं। आपदा राहत के नाम पर ग्रामीणों को किसी तरह की कोई भी राहत सामग्री नहीं बाटी गई है। दोनों विकास खण्ड के जिन गांवों में तुरंत राहत कार्यो की आवश्यक्ता है की सूचि नीचे दी गई है। इन गांवों में परिवारों की प्राथमिकता तथा आवश्यकता के आधार पर निम्न राहत सामग्री की आवश्यक्ता है।

1) अस्थाई आवास
2) गरम कपड़े
3) भोजन तथा दवाईयां

जनपद – रूद्रप्रयाग

विकास खण्ड – ऊखीमठ

नागजगई

26 परिवार प्रभावित हैं इनकी कुल जनसंख्या 122 है। पशु संख्या 85 है। जिनके घर पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हैं। 36 गौशालाएं क्षतिग्रस्त। जाख तोक में लगभग 250 नाली जमीन बह गई। कुल 22 परिवारों को 35000 रुपये प्रति परिवार के हिसाब से मुआवजा मिला है। तहसील से 3 टैंट मिले हैं।

फेगु

5 परिवार प्रभावित हुए है। 40–50 नाली जमीन बह गई।

खुमेरा

4 परिवार प्रभावित हुए जिनकी कुल जनसंख्या 16 है। मिलन केन्द्र व इण्टर कॉलेज क्षतिग्रस्त। प्रशासन से कोई मदद नहीं। जमीन धंस रही है।

क्यूँजा
1 परिवार प्रभावित, मकान पूर्ण रूप से ध्वस्त। परिवार वाले किसी दूसरे के घर में रह रहे हैं।

बोरा
1 परिवार प्रभावित जिसकी कुल जनसंख्या 3 है। तहसील रूद्रप्रयाग से मदद मिली है।

बरम्वाड़ी
2 परिवार प्रभावित जिनकी कुल जनसंख्या 13 है। 20 नाली जमीन खराब।

विकास खण्ड – अगस्त्यमुनी
थतेरा
चौकी बड़सिल
बचाणसौं

जनपद – अल्मोड़ा

विकासखण्ड – ताकुला
भेंटुली
1 मृत्यु, 1 घायल, 1 गाय, 1 बैल, 2 मकान पूर्ण क्षतिग्रस्त, तीन मकान गंभीर तथा 2 मकान आंशिक क्षतिग्रस्त। कुल 67 लोग प्रभावित।

सुनौली
1 मकान गंभीर, 5 मकान आंशिक क्षतिग्रस्त, कुल 9 परिवार प्रभावित।

भैंसोड़ी
1 मकान पूर्ण ध्वस्त, 1 आंशिक तथा 27 परिवार प्रभावित।

बसौली
तीन परिवार प्रभावित।

भड़ौली
25 परिवार प्रभावित।

सुराड़ी
14 परिवार प्रभावित।

गंगलाकोटली
1 मकान गंभीर, कुल 39 परिवार प्रभावित।

जिजाड़
3 मकान गंभीर, 3 आंशिक क्षतिग्रस्त तथा कुल 69 परिवार प्रभावित।

मल्ला तिरड़ा
31 परिवार प्रभावित

पोखरी
1 मकान गंभीर तथा 1 आंशिक क्षतिग्रस्त। कुल 21 परिवार प्रभावित।

जनपद – उत्तरकाशी

नोट – जनपद उत्तरकाशी के आंकड़े ग्रामवार न होकर संख्यावार प्रस्तुत किया गया है।

1. ब्लॉक – मोरी

ग्रामसभाएं	92
जनसंख्या	38331
पूर्ण क्षति	152
आंशिक क्षति	171
मृतक	4
घायल	5
पशु हानि	44 .
जमीन हैक्टेयर	44.482

2. ब्लॉक – भटवाड़ी

ग्रामसभाएं	95
जनसंख्या	885
पूर्ण क्षति	48
आंशिक क्षति	18

मृतक	4
घायल	9
पशु हानि	6
जमीन	4.026 हैक्टेयर

3. ब्लॉक – डुण्डा

ग्रामसभाएं	123
जनसंख्या	60000
पूर्ण क्षति	135
आंशिक क्षति	165
मृतक	1
घायल	–
पशु	8
हानि जमीन	32 हैक्टेयर

4. ब्लॉक – चिन्यालीसौंड़

ग्रामसभाएं	101
जनसंख्या	15000
पूर्ण क्षति	73
आंशिक क्षति	39
मृतक	2
घायल	3
पशु हानि	9
जमीन	9.5 हैक्टेयर

5. ब्लॉक – बड़कोट

ग्रामसभाएं	184
जनसंख्या	48000
पूर्ण क्षति	91
आंशिक क्षति	98
मृतक	9
घायल	–
पशु हानि	6
जमीन	116.117 हैक्टेयर

6. ब्लॉक – पुरोला

ग्रामसभाएं	81
जनसंख्या	32254
पूर्ण क्षति	82
आंशिक क्षति	55
मृतक	2
घायल	5
पशु हानि	32
जमीन	32.491 हैक्टेयर

विकास खण्ड – गरूड़

विकासखण्ड गरूड(बागेश्वर) में सर्वे के दौरान ग्रामवार प्रभावितों के नाम को अंकित किया गया है। इन प्रभावितों में अधिकांश लोगों के पास अब रहने लायक घर तक नहीं है। बहुत से ऐसे परिवार है जो दूसरों के घरों में अथवा किराये के घर में रह रहे हैं। नीचे अंकित सभी नामों को ग्रामवार दर्शाया गया है।

ग्राम पंचायत – पाटली

1. नन्दा बल्लभ पाण्डे, पुत्र श्री कृष्णानन्द पाण्डे।
2. भुवन चन्द्र जोशी, पुत्र श्री रामदत्त
3. हेमा जोशी, पत्नी श्री देवी दत्त,
4. रमेष चन्द्र जोशी, पुत्र श्री गंगा दत्त
5. गोविन्द बल्लभ जोशी
6. नन्द किशोर जोशी, पुत्र श्री देवकी नन्दन जोशी
7. सावित्री देवी, पत्नी श्री बसन्त बल्लभ
8. गीता देवी, पत्नी श्री गिरीश चन्द
9. गिरीश राम, पुत्र श्री रतन राम
10. शंकर लाल, पुत्र श्री प्रेम राम –मकान पूर्ण ध्वस्त। शीघ्र मदद की आवश्यकता

ग्राम पंचायत – कपिलेश्वर

1. देव गिरी, पुत्र श्री प्रेम गिरी
2. हेम गिरी, पुत्र श्री हीरा गिरी
3. ईश्वर गिरी, पुत्र श्री हयात गिरी
4. मोहन गिरी, पुत्र श्री अमर गिरी
5. हीरा गिरी, पुत्र श्री राम गिरी

ग्राम पंचायत पुनिया माफी – लौबांज

1. प्रताप सिंह, पुत्र श्री शिव सिंह —आवासीय मकान खतरे में
2. गोपाल दत्त, पुत्र बद्री दत्त —आंशिक नुकसान

ग्राम पंचायत – द्योनाई

1. मदन सिंह, पुत्र श्री दीवान सिंह
2. तारा दत्त, पुत्र श्री दीवान सिंह
3. विशन सिंह, पुत्र श्री दीवान सिंह
4. त्रिलोक सिंह, पुत्र श्री मादो सिंह
5. प्रदीप पाण्डे, पुत्र श्री राम दत्त
6. हरीश सिंह, पुत्र श्री महेन्द्र सिंह —आवासीय मकान ध्वस्त होने की कगार पर
7. अमर सेन, पुत्र श्री किशन सेन —मदद की शीघ्र आवश्यकता
8. हीरा सिंह, पुत्र श्री मोहन सिंह —दो बैल, एक गाय, एवं एक बछिया मर चुकी है, आवासीय मकान ध्वस्त

ग्राम पंचायत मथुरों – चाकली धार

1. कुंवर राम, पुत्र श्री हिम्मत राम
2. शेर राम
3. देव राम
4. गुंसाई राम
5. दिवान राम
6. मोहन राम
7. लीला राम
8. दिवान राम, पुत्र श्री चिम राम
9. शेर राम, पुत्र श्री चिम राम
10. रमेश राम, पुत्र श्री चिम राम
11. विशन राम, पुत्र श्री कुशाल राम
12. आनन्द राम, पुत्र श्री गोपाल राम
13. हीरा देवी, पत्नी श्री गोपाल राम
14. प्रेम राम, पुत्र श्री चिम राम
15. तिल राम, पुत्र श्री दौलत राम
16. पनी राम, पुत्र श्री राम लाल
17. जगदीश राम पुत्र श्री पनी राम —परिवार पाटली स्कूल में विस्थापित है

ग्राम पंचायत कत्यूरी सिमार – पाटली

1. नैन राम, पुत्र श्री तिल राम —आंशिक नुकसान शीघ्र मदद की आवश्यकता
2. नर राम, पुत्र श्री तिल राम —मकान ध्वस्त

ग्राम पंचायत कुनखेत – कटारमल

1. भगवत सिंह, पुत्र श्री प्रेम सिंह
2. सुन्दर सिंह, पुत्र श्री उदे सिंह
3. हरूली देवी, पत्नी श्री डुंगर सिंह
4. उदे सिंह, पुत्र श्री मदन सिंह
5. उमेद सिंह, पुत्र श्री कुशाल सिंह
6. जीवन सिंह, पुत्र श्री खीम सिंह
7. जगत सिंह, पुत्र श्री राधे सिंह
8. कलावती देवी, पत्नी श्री नारायण सिंह
9. ललित सिंह, पुत्र श्री पान सिंह
10. बहादुर सिंह, पुत्र श्री कुशाल सिंह –2 बैल, 2 भैंस व पांच बकरियां मर चुकी हैं
11. हरीश राम, पुत्र श्री रतन राम –शीघ्र मदद की आवश्यकता
12. गोपाल राम, पुत्र श्री राम लाल –शीघ्र मदद की आवश्यकता

ग्राम पंचायत – लखनी

1. हरीराम, पुत्र श्री नरी राम –मकान ध्वस्त एवं जमीन खिसक गई है
2. खीम राम, पुत्र श्री नरी राम –मकान रहने लायक नहीं है
3. राधिका देवी, पत्नी श्री गोपाल राम –मकान रहने लायक नहीं है
4. खगी राम, पुत्र श्री गंगा राम –मकान रहने लायक नहीं है
5. गोवर्धन राम, पुत्र श्री गंगा राम –मकान रहने लायक नहीं है
6. नन्दन राम पुत्र श्री मनोरथ राम –मकान रहने लायक नहीं है
7. गंगा राम, पुत्र श्री धनी राम –मकान रहने लायक नहीं है
8. बिशन राम, पुत्र श्री नाथु राम –मकान रहने लायक नहीं है
9. राजन राम, पुत्र श्री लीला राम –मकान रहने लायक नहीं है
10. जगदीश राम, पुत्र श्री लीला राम –मकान रहने लायक नहीं है
11. हरी राम, पुत्र श्री लीला राम –मकान रहने लायक नहीं है
12. भरत कुमार, पुत्र श्री प्रेम राम
13. हीरा राम, पुत्र श्री शिव राम
14. तारी राम, पुत्र श्री किशन राम
15. आनन्द राम, पुत्र श्री शिव राम
16. मथुरा प्रसाद, पुत्र श्री किशन राम
17. रमेश राम पुत्र श्री अम्बीराम –मकान खतरे में है, जमीन खिसक रही है
18. नन्दन राम, पुत्र दिवानी राम

ग्राम पंचायत – पाये

1. महेन्द्र सिंह, पुत्र श्री प्रताप सिंह
2. कान्तुली देवी, पत्नी श्री तारा राम
3. दान सिंह, पुत्र श्री वीर सिंह
4. नन्दा बल्लभ, पुत्र श्री धर्मानन्द
5. चिन्तामणि, पुत्र श्री राम पन्त

ग्राम पंचायत – सिल्ली

1. किशोर खोलिया, पुत्र श्री पूरन चन्द्र
2. देवी दयाल, पुत्र श्री पनी राम
3. पूरन चन्द्र, पुत्र श्री प्रेम बल्लभ
4. प्रकाश चन्द्र, पुत्र श्री जगदीश चन्द्र
5. मथुरा दत्त, पुत्र श्री बाला दत्त
6. देवकी नन्दन, पुत्र श्री केशव दत्त

कौसानी स्टेट

1. गिरधारी लाल, पुत्र श्री नरी राम –मकान ध्वस्त, शीघ्र मदद की आवश्यकता
2. लालू राम, पुत्र श्री प्रेम राम –मकान ध्वस्त
3. खीम राम, पुत्र श्री भवानी राम
4. देवेन्द्र सिंह, पुत्र श्री केदार सिंह, –कृषि भूमि का नुकसान एवं पानी का टैंक ध्वस्त
5. हीरा सिंह, पुत्र श्री केदार सिंह –खेत का नुकसान
6. हरीश सिंह, पुत्र श्री भगवत सिंह –खेत का नुकसान
7. नरेन्द्र सिंह, पुत्र श्री माल सिंह –खेत का नुकसान
8. गंगा देवी, पत्नी श्री दिनेश राम –मकान ध्वस्त की कगार पर

ग्राम पंचायत कौसानी, तोक – गेवाड़

1. आनन्द सिंह, पुत्र श्री राम सिंह –मकान एवं आंगन, रास्ता एवं 10 खेत का नुकसान। शीघ्र मदद की आवश्यकता

2. धरम सिंह —फसल वाले 12 खेतों का नुकसान
3. चन्दन सिंह —3 खेतों का नुकसान
4. नर सिंह —मकान ध्वस्त होने की कगार पर
5. गोविन्द बल्लभ पाण्डे —गौशाला एवं तीन खेतों का नुकसान शीघ्र मदद की आवश्यकता
6. बलवन्त सिंह —सब्जी वाले चार खेत और चाय बागान का नुकसान

ग्राम पंचायत कौसानी, तोक – खालू खेत

1. थापली देवी, पत्नी श्री स्व0 आनन्द राम —गौशाला ध्वस्त व मकान रहने लायक नहीं
2. जगमोहन सिंह, पुत्र श्री गोपाल सिंह —12 खेत नष्ट व रहने के मकान में दरार

ग्राम पंचायत कौसानी, तोक – बलना

1. नारायण सिंह भण्डारी, पुत्र श्री कुशाल सिंह —मकान को खतरा आंगन ध्वस्त। शीघ्र मदद की आवश्यकता
2. डुंगर सिंह, पुत्र श्री पान सिंह —शीघ्र मदद की आवश्यकता
3. मोहन सिंह, पुत्र श्री कुशाल सिंह —गौशाला नष्ट

ग्राम पंचायत – लौबांज

1. बहादुर सिंह, पुत्र श्री धरम सिंह, गड़िया —गौशाला ध्वस्त
2. लाल सिंह, पुत्र श्री बहादुर सिंह, भोजगण —गौशाला ध्वस्त
3. आनन्द सिंह, पुत्र श्री चनर सिंह —खेतों को नुकसान
4. जगत राम, दिवान राम —मकान खतरे में
5. हीरा सिंह, पुत्र श्री भवान सिंह —मकान खतरे में
6. उमेद सिंह, पुत्र श्री भोपाल सिंह —मकान खतरे में
7. नारायण दत्त, पुत्र श्री मोहन चन्द्र —मकान खतरे में
8. नैन सिंह, पुत्र श्री मोहन सिंह —मकान खतरे में

ग्राम पंचायत – धैना

1. भुवन चन्द्र तिवारी, पुत्र श्री चिन्तामणि —मकान ध्वस्त, प्रा0 पा0 में विस्थापित

ग्राम पंचायत – अणा

1. हरीश सिंह रावत, पुत्र श्री स्व0 प्रताप सिंह रावत –पूर्ण ध्वस्त एवं विस्थापित। शीघ्र मदद की आवश्यकता
2. भूपाल सिंह रावत, पुत्र श्री स्व0 प्रताप सिंह रावत –पूर्ण ध्वस्त एवं विस्थापित
3. नन्दी देवी, पत्नी स्व0 शंकर सिंह रावत
4. शंकर सिंह, पुत्र श्री हयात सिंह
5. शिव सिंह, पुत्र श्री दीवान सिंह
6. किशन सिंह, पुत्र श्री उमराव सिंह

ग्राम पंचायत जाड़ापानी – कौसानी

1. बिशन राम, पुत्र श्री बची राम –मकान ध्वस्त एवं एक गाय दब गई है।

ग्राम पंचायत दुदिला

1. दमुली देवी, पत्नी स्व0 श्री हरीश राम –मकान ध्वस्त
2. हरीश राम, पुत्र स्व0 श्री उमेद राम –मकान ध्वस्त
3. दयाल राम, पुत्र स्व0 श्री हिम्मत राम –मकान ध्वस्त
4. नंदन प्रसाद, पुत्र श्री स्व0 चनी राम
5. दयाल राम, पुत्र श्री स्व0 चनी राम
6. गणेश लाल, पुत्र श्री स्व0 चनी राम
7. उदे राम, पुत्र श्री स्व0 बल राम
8. पूरन लाल, पुत्र श्री लीला राम
9. जगदीश राम, पुत्र श्री लीला राम
10. भगवत प्रसाद, पुत्र स्व0 श्री खीम राम
11. हिरूली देवी, पत्नी श्री स्व0 खीम राम
12. हरीश राम पुत्र स्व0 श्री देव राम
13. गीता देवी पत्नी श्री गिरीश लाल
14. अनिल कुमार पुत्र स्व0 श्री हरीश राम
15. नन्दन राम पुत्र स्व0 श्री जय राम
16. नरी राम पुत्र श्री अन्त राम
17. नन्दन राम पुत्र श्री अमर राम
18. कैलाश राम पुत्र श्री किशन राम
19. धनी राम पुत्र श्री गंगा राम

20. मोहन राम पुत्र श्री बाला राम
21. राजेन्द्र प्रसाद पुत्र श्री भुवन राम
22. नवीन कुमार पुत्र श्री पूरन राम
23. विपिन राम पुत्र श्री पूरन राम
24. राम लाल पुत्र श्री दल राम
25. पूरन राम पुत्र श्री राधे राम
26. गोपाल राम पुत्र श्री दल राम
27. दीप चन्द्र पुत्र श्री गोपाल राम
28. ललिता प्रसाद पुत्र श्री कुश राम
29. नन्द राम पुत्र श्री कुश राम
30. ईश्वरी राम पुत्र श्री राम लाल
31. ललिता प्रसाद, पुत्र श्री मनी राम
32. प्रमोद कुमार, पुत्र श्री ललिता प्रसाद
33. आनन्द प्रसाद, पुत्र श्री ललिता प्रसाद
34. जगदीश राम, पुत्र श्री ललिता प्रसाद
35. राजेन्द्र प्रसाद, पुत्र श्री ललिता प्रसाद
36. केशव लाल, पुत्र श्री पन राम
37. राजेन्द्र प्रसाद, पुत्र श्री हरि राम
38. आनन्द प्रसाद, पुत्र श्री प्रेम राम
39. बचुली देवी, पत्नी श्री किशन राम
40. कैलाश राम, पुत्र श्री ललिता प्रसाद
41. पूरन राम, पुत्र श्री बिशन राम,
42. उमेश राम, पुत्र श्री बिशन राम
43. महेश राम, पुत्र श्री प्रेम राम
44. राजेन्द्र प्रसाद, पुत्र श्री भुवन राम
45. गोप राम, पुत्र श्री विजय राम
46. जगदीश राम, पुत्र श्री तेज राम
47. जानकी देवी, पत्नी श्री दिनेश राम
48. भुवन राम, पुत्र श्री जैत राम
49. हेम चन्द्र, पुत्र श्री पूरन राम
50. दीवान राम, पुत्र श्री मदन राम

ग्राम पंचायत – जिनखोला

1. नित्यानन्द जोशी, पुत्र श्री गंगादत्त –आवास ध्वस्त
2. पूरन चन्द्र, पुत्र श्री मथुरा दत्त –आवास ध्वस्त

3. चन्दन पुरी —आवास ध्वस्त
4. आकाश पुरी, पुत्र श्री नारायण पुरी
5. अनन्दी देवी, पत्नी श्री तारा पुरी —आवास में दरार
6. गंगा देवी, पत्नी श्री बच पुरी
7. प्रेम बल्लभ, पुत्र श्री लीलाधर
8. गोपाल सिंह, पुत्र श्री दीवान सिंह
9. विरेन्द्र सिंह रौतेला
10. हेमा देवी, पत्नी श्री हीरा देवी
11. जगदीश सिंह, पुत्र श्री वीर सिंह —आवास ध्वस्त
12. राधिका देवी
13. किसरी देवी
14. गोविन्दी देवी, पत्नी श्री बहादुर सिंह
15. भागीरथी देवी, पत्नी श्री नैन सिंह
16. चनुली देवी, पत्नी श्री लील राम —मकान खतरे में
17. मदन सिंह, पुत्र श्री देव सिंह —आवास ध्वस्त
18. दिनेश पाण्डे
19. राजेन्द्र सिंह, पुत्र श्री लछम सिंह
20. चन्द्र कान्ता, पत्नी श्री सगत सिंह
21. बलवन्त सिंह, पुत्र श्री सगत सिंह
22. मोहन राम, पुत्र श्री पनी राम

कई अवास रहने लायक नहीं, परिवार विस्थापित हैं।

ग्राम पंचायत – मेलाडुंगरी

1. नवीन राम, पुत्र श्री गाविन्द राम
2. खड़क राम, पुत्र श्री मानी राम
3. रमेश राम, पुत्र श्री अन राम
4. फकीर राम, पुत्र श्री अन राम
5. हरीश राम, पुत्र श्री विशन राम
6. ख्याली राम
7. मोहन राम, पुत्र श्री दिवान राम

उपरोक्त लोगों के आवास रहने लायक नहीं, परिवार विस्थापित हैं।

ग्वाल्दे

1. मदन राम
2. हेमा देवी, पत्नी दिवान राम
3. आशा देवी, पत्नी शिवराम
4. भवानी देवी, पत्नी राम सिंह

कपलढुंगा

1. बिशन नाथ पुत्र प्रेम नाथ

नौघर स्टेट

1. हेम राम पुत्र देव राम

ग्राम सभा – डोभा

1. मोहन चन्द्र पुत्र हरिदत्त
2. मथुरादत्त पुत्र हरिदत्त
3. हरीश प्रसाद
4. तारा राम

उपरोक्त ग्रामीणों को त्वरित राहत की आवश्यकता।

उत्तराखण्ड़ में आपदा के बाद जो आंकड़े सामने आए वह चौकाने वाले हैं। इन आकड़ों ने यह साबित कर दिया कि आज भी दलित समाज हासिए में है। सरकार की तमाम योजनाओं के बावजूद दलित समाज का उत्थान होता नज़र नहीं आ रहा है। लगभग 80 प्रतिशत दलित समुदाय ने इस आपदा में अपना घरबार ही नहीं जान भी गवाई है। रानीखेत के इन्द्रा कालोनी का उदाहण ही ले लिया जाए तो, वहां 99 प्रतिशत दलित समुदाय के लोग रहते हैं। भूमिहिन और मजदूर वर्ग के ये लोग ख़तरों की जद में रहने को मजबूर है। इनकी सहायता न तो राज्य सरकार कर रही है और न ही केन्द्र। ऐसे में तमाम दवों के बाद भी दलित समाज हमेशा से ही हासिये में रहा है।

उत्तराखण्ड के इस आपदा ने तो यह साफ कर दिया है कि दलितो के हितों के लिए न तो सरकार जागरूक है और न ही समाज। उनकी स्थिति आज भी जस की तस बनी हुई है।

सरकारी कागजों में आंकड़ों की स्थिति और आपदा राहत के मानक

सन् 2007 में नृपसिंह नपच्याल के मुख्य सचिव के कार्यकाल के दौरान प्रदेष सरकार ने आपदा राहत के लिए जो मानक बनाये थे, उनके आधार पर ही 2010 के आपदा राहत के मानक तय किये गये हैं। इन्हीं मानकों के आधार पर अलग–अलग श्रेणी के लिए राहत की दरों को षंषोधित किया गया है। जिसकी सूची निम्नवत है।

1.	मृत्यु	75000
2.	घायल व अपंगता पर	40 से 75 हजार (अलग–अलग श्रेणी)
3.	कपड़े आदि के लिए	2000 (बहने की स्थिति में)
4.	बरतन आदि	2000 (बहने की स्थिति में)
5.	मकान की क्षति	पूर्ण क्षति के लिए – 50000
6.	भारी क्षति के लिए	30000
7.	आंशिक क्षति	10000
8.	खेत से मलबा हटाने हेतु राशि	10000 प्रति हैक्टेयर 200 प्रति नाली
9.	नदी द्वारा कटाव पर	25000/500 प्रति नाली
10.	घोड़ा, गाय, भैंस के मरने पर	1500

नोट – इन सबके अतिरिक्त इस राहत पैकेज में गौशालाओं का मुआवजा, शौचालय का मुआवजा, आंगन, घर के पीछे की दीवारों, घर तक का संपर्क मार्ग आदि का कोई विवरण नहीं दिया गया है।

आपदा प्रभावितों की सहायता हेतु प्रस्ताव

उत्तराखण्ड के नागर समाज, जन सरोकारों से जुडें रचनाधर्मियों एवं सामाजिक संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में आपदा संवेदना मंच का गठन किया गया और चर्चा एवं विचार विमर्श के उपरान्त मंच के माध्यम से उत्तराखण्ड में आपदा प्रभावितों की सहायता हेतु निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया गया –

प्रस्ताव

1 प्रदेश में हुई प्राकृतिक आपदा एवं प्रभावित लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए राज्य गठन दिवस को सादगीपूर्ण आयोजित किया जाए।

2 उत्तराखण्ड में आपदा प्रभावित लोगों कों तुरन्त मकान के बदले मकान दिया जाये और जमीन के बदले जमीन उपलब्ध करायी जाए।

3 बेघर परिवारों के लिए तुरंत संभावित राहत देने का प्रावधान किया जाए। संकटग्रस्त क्षेत्रों में राहत पहुंचाने में स्थानीय स्वयंसेवकों/नागर समाज/जन संगठनों की मदद ली जाए।

4 कृषि एवं कृषि भूमि के लिए दिया जाने वाला वर्तमान मुआवजा न केवल नाकाफी है, बल्कि अपमानजनक है, इसमें आवश्यक संशोधन किये जाने की तुरन्त आवश्यकता है।

5 आवास के सन्दर्भ में आशिंक क्षति, आशिंक तीक्ष्ण क्षति, पूर्ण क्षति के मानक को संशोधन कर मकान रहने योग्य है या अयोग्य है किया जाए।

6 राहत प्रबंधन के लिए प्रदेश से लेकर विकास खण्ड स्तर पर जन निगरानी जो लीज पर दी गयी हैं और उसका जनहित में किसी प्रकार का उपयोग नहीं है, उसे निरस्त कर उन पर प्रभावितों का पुनर्वास किया जाए।

7 ऐसे परिवार जो वन ग्राम, टोंगिया ग्राम, गोठ व खत्ते वाली भूमि पर बसे हुए हैं, उन्हें संवदेना व मानवता के आधार पर प्राथामिकता देते हुए पुनर्वास सुविधा दी जाए।

8 तुरंत राज्य की आपदा नीति घोषित की जाये और आपदा नीति बनाने में नागर

समाज का भी सहयोग लिया जाये तथा अविलम्ब राज्य आपदा प्रबंधन कानून बनाकर लागू किया जाए।

9 आपदा से संबंधित जो भी सरकारी प्रबंधन व्यय हो वह आपदा राहत कोष से व्यय न किया जाए।

10 शीतकाल के कारण बर्फवारी या अधिक उंचाई वाले क्षेत्रों में प्रभावित परिवारों को समुचित आश्रय उपलब्ध कराए जाए।

11 मनरेगा के कार्ययोजना में आपदा से क्षतिग्रस्त कृषि भूमि व भवनों की पुननिर्माण कार्यों को भी सम्मिलित किया जाए।

12 ग्राम पंचायत, जिला व ब्लाक स्तर पर आपदा व राहत की परिस्थिति को नियमित रूप से प्रकाशित किया जाए।

13 मुआवजा राशि भौगोलिक परिस्थिति के आधार पर तय की जाय जैसे सुगम, दुर्गम, अतिदुगर्म क्षेत्र।

14 ऐसे स्कूल एवं परिवार जो आपदा से प्रभावित हुए हैं, उनकी सूची बनाकर उनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों को पुस्तकें पुनः उपलब्ध करायी जाए।

15 आपदा प्रभावित गांवों में भवन निर्माण के लिए अतिरिक्त हक छपान, पत्थर एवं अन्य स्थानिक निर्माण सामग्री स्वीकृत की जाए।

16 ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक विद्यालय, पंचायतघर और अन्य जन सुविधाओं से सम्बन्धित भवनों के निर्माण के लिए निःशुल्क नाप भूमि की बाध्यता समाप्त की जाए तथा चयनित भूमि की भूगर्भीय जांच के उपरान्त ही स्वीकृति प्रदान की जाए।

17 पहाडी एवं तराई क्षेत्रों में आपदा से प्रभावित परिवारों के महत्वपूर्ण दस्तावेज जैसे – राशनकार्ड, मतदाता पहचान पत्र, शैक्षणिक योग्यता के प्रमाण पत्र अविलम्ब द्वितीय प्रतिलिपि उपलब्ध करायी जाय व इसके लिए ग्राम पंचायत अधिकारी एवं पटवारी को पृथक निर्देश जारी किये जाए।

पर्यावरण के बदलते स्वरूप कहें या बिगड़ती हालत। दोनों ही मायनों में बदलाव ही सर्वोपरी है। लेकिन जो इस वर्ष दुनियां के हर हिस्से में देखने को मिला वह शयद ही पिछले 10 वर्षो में देखने को मिला होगा। औधोगिकरण का विकास जितनी तेजी से इन 10 वर्षो में हुआ है, वह आसमान को छूने जैसा है।